Bengali

কেশবানন্দ ভারতী
বনাম
কেরল রাষ্ট্র

মনু/এস.সি./০৪৪৫/৭৯৭৩

তথ্যসমূহ

স্বামী শ্রী এইচ.এইচ কেশবানন্দ ভারতী, "এডনিয়ার মুট" এর প্রধান, কেরল সরকারের ভূমি সংস্কার (সংশোধন) আইনের উপর সীমাবদ্ধতা যোগ করার চ্যালেঞ্জ করেন। প্রধানত, জমি সংশোধন আইনের আওতায় ধর্মীয় জমির পরিচালনা করার অধিকারের জন্যে আর্টিকেল ২৬ অধীনে একটি আবেদন জমা করেন তিনি।

১৯৭১-৭২ সালে সংবিধানটি সংশোধিত হয় এবং এর ফলে নবম তালিকায় নিম্নলিখিত আইনগুলি যোগ করা হয়েছেঃ

- কেরল ভূমি সংস্কার (সংশোধন) আইন, ১৯৬৯ (কেরল আইন ৩৫, ১৯৬৯ এর সংশোধন)।
- কেরল ভূমি সংস্কার (সংশোধন) আইন, ১৯৭১ (কেরল আইন ২৫, ১৯৭১ এর সংশোধন)।

তারপর আবেদনকারী সংবিধানিক সংশোধনের বিরুদ্ধে আরও অন্য ধারাতে কে মামলা দায়ের করেন সংশোধনগুলি কে চ্যালেঞ্জ করার জন্য।

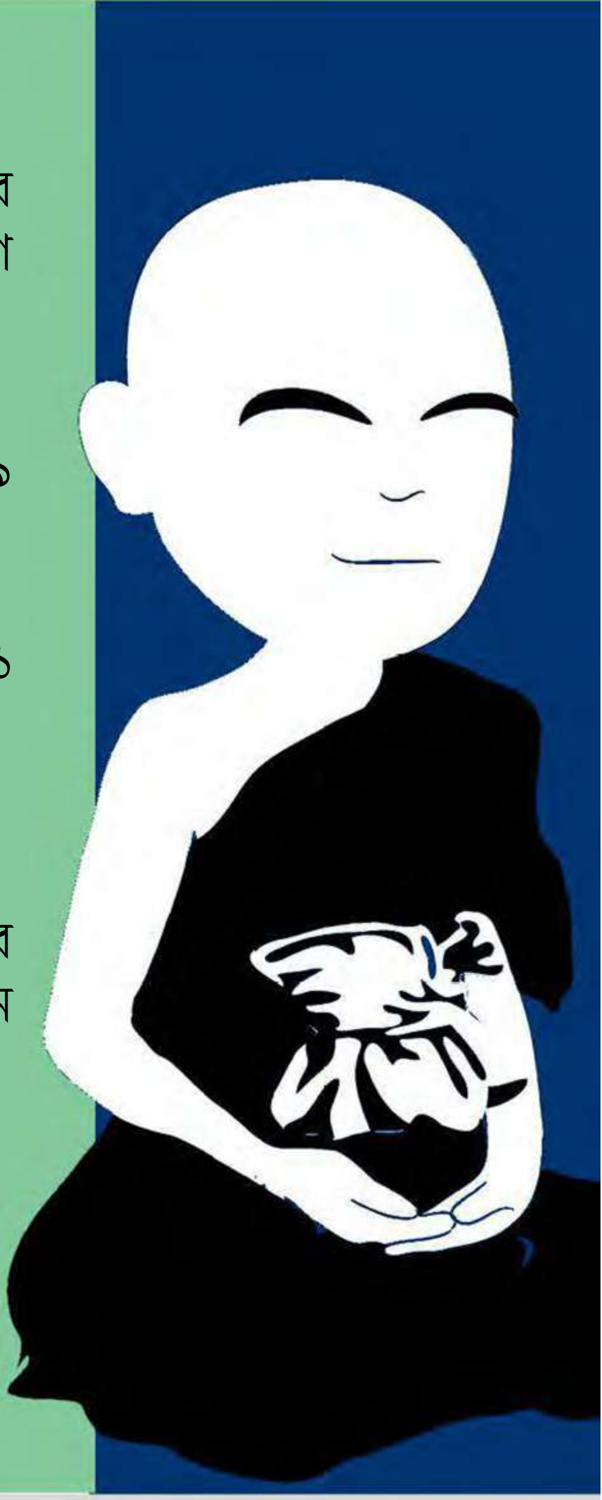

আইনের প্রশ্ন

সংবিধানের ধারা ৩৬৮ দ্বারা প্রদত্ত সংশোধনী ক্ষমতার কী সীমাবদ্ধতা রয়েছে তা, সংবিধানিক ধারার ১৩ (২) র মাধ্যমে জানা যায় (এ ধারা রাষ্ট্রকে কোনও আইন তৈরি করতে বাধা প্রদান করে যা অধিবাসী দের মৌলিক অধিকারগুলি ক্ষতি করতে পারে)।

বিচার

সুপ্রিম কোর্ট গোলাকনাথ বনাম পাঞ্জাব রাষ্ট্র মামলার রায় পর্যালোচনা করে এবং ২৪তম, ২৫তম, ২৬তম এবং ২৯তম সংশোধনীগুলির বৈধতা পর্যালোচনা করে। মামলাটি একটি সংবিধানিক বেঞ্চের ১৩জন বিচারকগনের দ্বারা শুনানি হয়। একটি তীব্র ভাবে বিভক্ত রায়ে, ৭-৬ অংশে, আদালত সিদ্ধান্ত নেয় যে সংসদ ভবনের কাছে "প্রশাসনিক" ক্ষমতা রয়েছে, কিন্তু এমন ক্ষমতা নেই যে সংবিধানের মৌলিক উপাদান গুলিকে বা মৌলিক বৈশিষ্ট্যগুলিকে ধ্বংস করা যায়।

- সুপ্রিম কোর্ট গোলাকনাথ বনাম পাঞ্জাব রাষ্ট্র মামলার রায় পর্যালোচনা করে এবং ২৪তম, ২৫তম, ২৬তম এবং ২৯তম সংশোধনীগুলির বৈধতা পর্যালোচনা করে। মামলাটি একটি সংবিধানিক বেঞ্চের ১৩জন বিচারকগনের দ্বারা শুনানি হয়। একটি তীব্র ভাবে বিভক্ত রায়ে, ৭-৬ অংশে, আদালত সিদ্ধান্ত নেয় যে সৎসদ ভবনের কাছে "প্রশাসনিক" ক্ষমতা রয়েছে, কিন্তু এই ক্ষমতা নেই যে সংবিধানের মৌলিক উপাদান গুলিকে বা মৌলিক বৈশিষ্ট্যগুলিকে ধ্বংস করা যায়।

- গোলাকনাথ বনাম পাঞ্জাব রাষ্ট্র, এয়ার ১৯৬৭ এস.সি. ১৬৪৩ (যেখানে ঘোষণা হয়েছিল যে মৌলিক অধিকারগুলি পার্লামেন্টের সংশোধনী ক্ষমতার বাইরে থাকে) র রায় পরিবর্তন করা হয়েছিল। সংবিধান (চব্বিশতম সংশোধন) আইন, ১৯৭১ (যা পার্লামেন্টের কাছে সংবিধানের যে কোনও অংশ সংশোধন করার ক্ষমতা প্রদান করে) কে বৈধ বলে গণ্য করা হয়েছিল। সংশোধিত রূপে সংস্থান ৩৬৮ বৈধ ছিল, কিন্তু এটি পার্লামেন্টের কাছে কোনও ক্ষমতা প্রদান করেনি যে সংবিধানের মৌলিক প্রতিষ্ঠান বা কাঠামোকে পরিবর্তন করা যাবে। তবে, আদালত কোনও পূর্ণব্যাখ্যার মাধ্যমে জানায় নি যে মৌলিক প্রতিষ্ঠান বলতে কি বোঝায়, একইভাবে কিছু বিচারকরা কিছু উদাহরণ দিয়েছিলেন। সংশোধনী আইন ৩১সি-র সাংবিধানিক অবৈধতা ঘোষণা হয়েছিল।

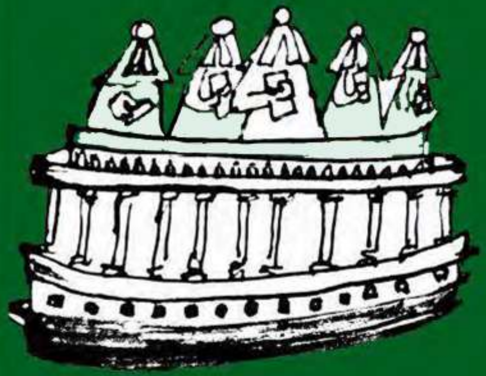

এইচ আর খান্না, বিচারপতি:

"সংবিধান একটি গেট নয়, বরং একটি পথ। সংবিধানের নিম্নলিখিত প্রস্তুতকরণের মধ্যে বোধগম্য যে জিনিসগুলি স্থান থামা নয়, বরং চলতে থাকে, জীবনের একটি প্রগতিশীল জাতির, যেমন একজন ব্যক্তি স্থানমত স্থায়ী এবং বন্ধনগ্রস্ত নয়, বরং গতিশীল এবং চটকপূর্ণ। একটি সংবিধান তাহলে প্রশাসনের কাজে প্রয়োগ এবং পরীক্ষার জন্য যথার্থ সুযোগ ব্যবস্থা করতে পারে। একটি সংবিধান, এটি কল্পিত ভাষাব্যাকরণের জন্য নয়, বরং জনগণের জীবনের আদেশ সাধনের মাধ্যম।"

এস.এম. সিকরি, প্রধান বিচারপতি মো:

"সংবিধানের প্রতিটি বিধান সংশোধন করা যাতে সংসদের মৌলিক বিভাগ এবং গঠন যথেষ্ট থাকূ সম্ভব। মৌলিক গঠন নিম্নলিখিত বৈশিষ্ট্যগুলির মধ্যে পরিস্থিত করা যেতে পারে:

• সংবিধানের প্রধানতা;
• গণতান্ত্রিক এবং প্রজাতন্ত্রিক সরকারের গঠন;
• ধর্মনিরপেক্ষ সংবিধানের সুচনা;
• সংসদ, কার্যপালিকা এবং বিচারবিভাগ মধ্যে বিভাজন;
• সংবিধানের ফেডারেল স্বরূপ।

উপরোক্ত গঠনটি মৌলিক ভিত্তি উপর নির্মিত, অর্থাৎ ব্যক্তির মর্যাদা এবং স্বাধীনতা। এটি অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ। এটি কোনও সংশোধনের মাধ্যমে নষ্ট করা যায় না।”

manupatra®

English

AWAAZ

www.manupatra.com

JUSTICE adda

Kesavananda Bharati vs. State of Kerala

MANU/SC/0445/1973

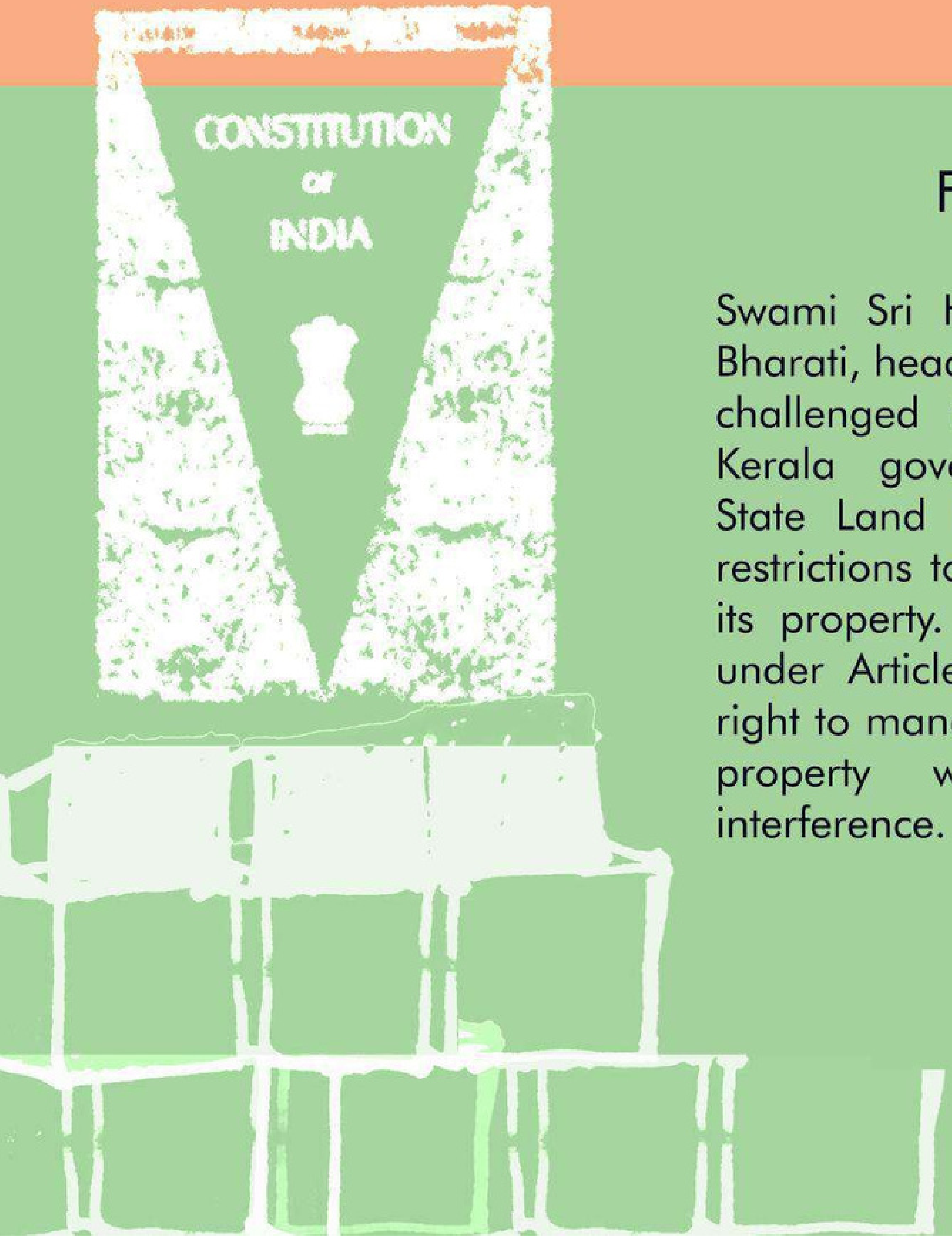

FACTS

Swami Sri HH Sri Kesavananda Bharati, head of the "Edneer Mutt" challenged the attempts of the Kerala government under two State Land Reform Acts to add restrictions to the management of its property. A petition was filed under Article 26, concerning the right to manage religiously owned property without Government interference.

The Constitution was amended in 1971-72 which resulted in the following Acts being inserted into the Ninth Schedule:-

- The Kerala Land Reforms (Amendment) Act, 1969 (Kerala Act 35 of 1969).
- The Kerala Land Reforms (Amendment) Act, 1971 (Kerala Act 25 of 1971).

The petitioner then urged additional grounds and the amendment of the writ petition in order to challenge the Constitutional amendments.

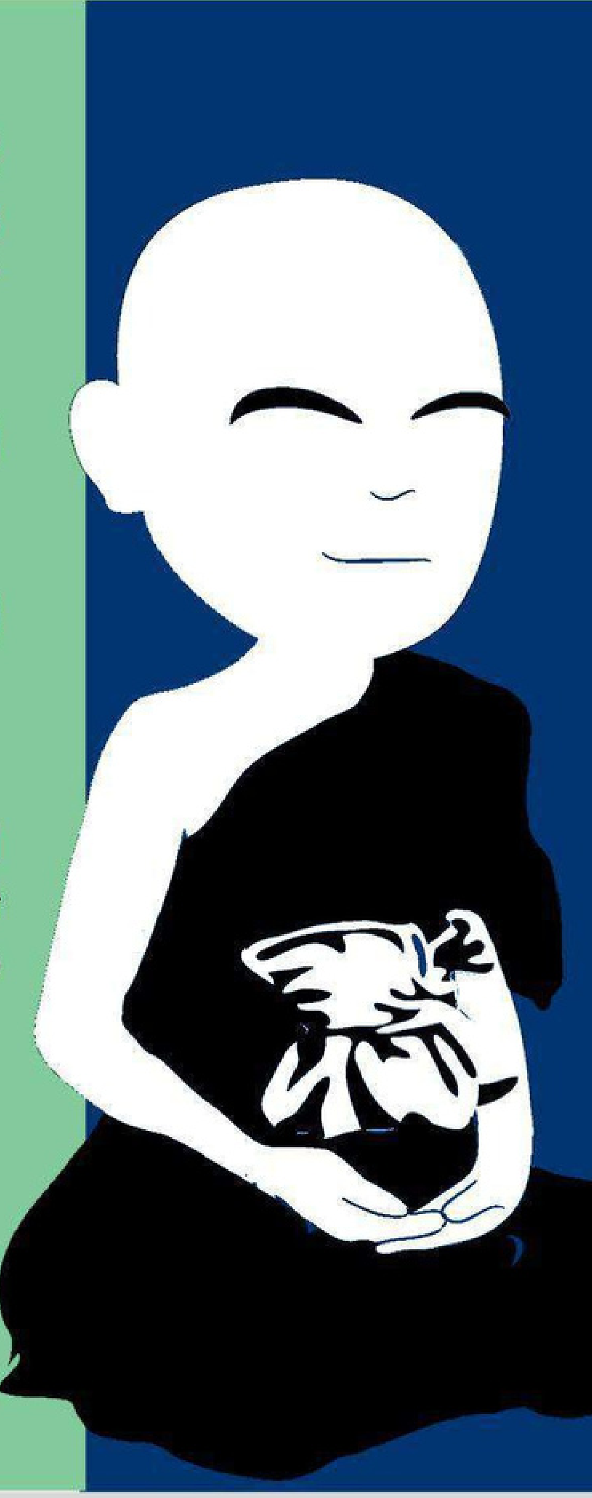

QUESTIONS OF LAW

What is the extent of the amending power conferred by Article 368 of the Constitution, apart from Article 13(2) (puts restrictions upon the State from making any laws that abridge fundamental rights), on Parliament?

HELD

The Supreme Court reviewed the decision in Golaknath v. State of Punjab, and considered the validity of the 24th, 25th, 26th and 29th amendments. The case was heard by a Constitutional bench of 13 judges. In a sharply divided verdict, by a margin of 7-6, the Court held that while the Parliament has "wide" powers, it did not have the power to destroy or emasculate the basic elements or fundamental features of the Constitution.

- Golaknath v. State of Punjab, AIR 1967 SC 1643 (which had held that fundamental rights were beyond the amending powers of Parliament) was overruled.

- The Constitution (Twenty-fourth Amendment) Act, 1971 (giving power to Parliament to amend any part of the Constitution) was held to be valid.

- Article 368, as amended, was valid but it did not confer power on the Parliament to alter the basic structure or framework of the Constitution. The Court, however, did not spell out in any exhaustive manner as to what the basic structure was except that some judges gave a few examples.The amendment of Article 31C was held invalid.

H.R KHANNA, J:

"Constitution is not a gate but a road. Beneath the drafting of a Constitution is the awareness that things do not stand still but move on, that life of a progressive nation, as of an individual, is not static and stagnant but dynamic and dashful. A Constitution must therefore contain ample provision for experiment and trial in the task of administration. A Constitution, it needs to be emphasised, is not a document for fastidious dialectics but the means of ordering the life of a people."

S.M. SIKRI C.J:

"Every provision of the Constitution can be amended provided in the result the basic foundation and structure of the Constitution remains the same. The Basic Structure may be said to consist of the following features:

- Supremacy of the Constitution;
- Republican and Democratic forms of Government;
- Secular character of the Constitution;

- Separation of powers between the legislature, the executive and the judiciary;

- Federal character of the Constitution.

The above structure is built on the basic foundation, i. e. the dignity and freedom of the individual. This is of supreme importance. This cannot by any form of amendment be destroyed."

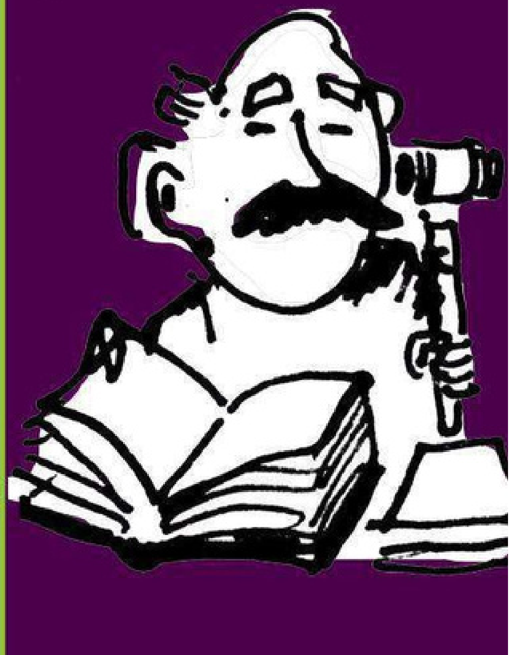

manupatra®

Hindi

AWAAZ

www.manupatra.com

JUSTICE adda

केशवानंद भारती
बनाम
केरल राज्य

मनु/एस सी/0445/1973

तथ्य

“एडनीर मठ” के प्रमुख स्वामी श्री एच. एच. श्री केशवानंद भारती ने केरल राज्य सरकार के दो भूमि सुधार अधिनियमों के तहत अपनी संपत्ति के प्रबंधन पर प्रतिबंध लगाने के प्रयासों को चुनौती दी। सरकारी हस्तक्षेप के बिना धार्मिक स्वामित्व वाली संपत्ति के प्रबंधन के अधिकार के संबंध में अनुच्छेद 26 के तहत एक याचिका दायर की गई थी

संविधान को 1971-72 में संशोधित किया गया था जिसके परिणामस्वरूप निम्नलिखित अधिनियमों को नौवीं अनुसूची में शामिल किया गया था:-

- केरल भूमि सुधार (संशोधन) अधिनियम, 1969;
- केरल भूमि सुधार संशोधन) अधिनियम, 1971

तब याचिकाकर्ता ने संवैधानिक संशोधनों को चुनौती देने के लिए अतिरिक्त आधार और रिट याचिका में संशोधन का आग्रह किया।

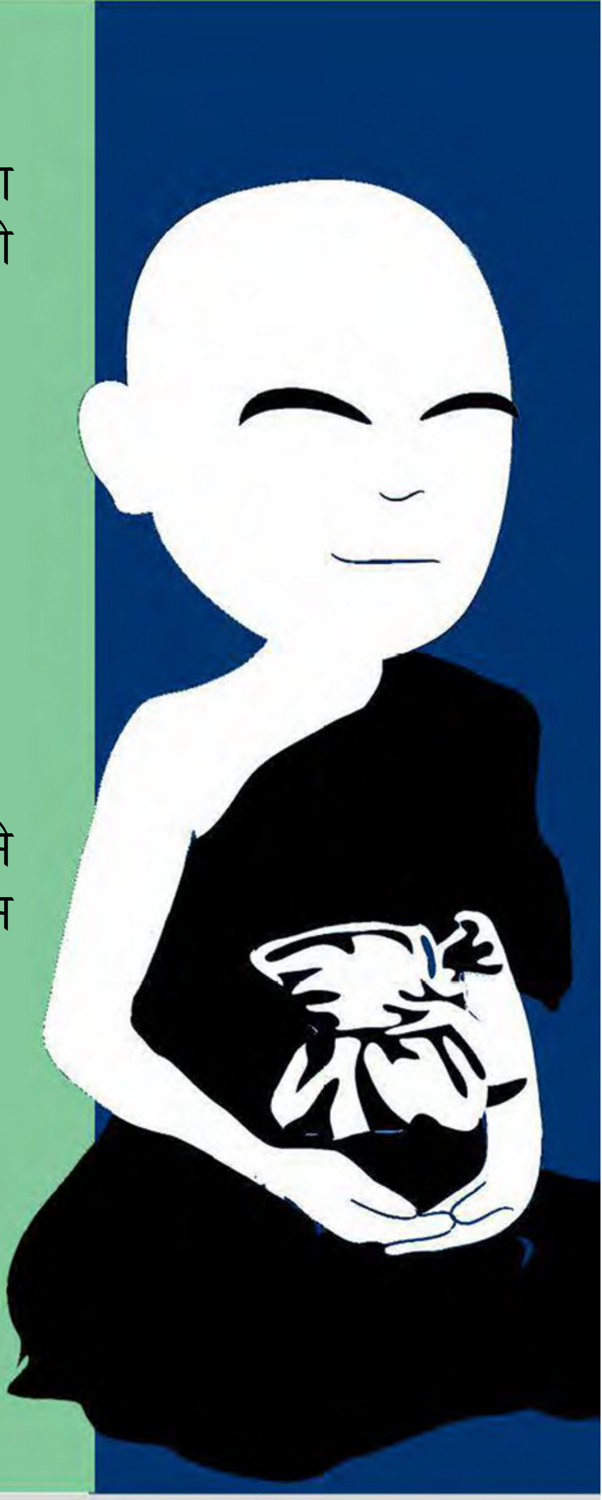

काननूी प्रश्न

संविधान के अनुच्छेद 368 द्वारा, अनुच्छेद 13 (2) के अलावा (जो राज्य को मौलिक अधिकारों को कम करने वाले कोई भी कानून बनाने से प्रतिबंधित करता है) संसद को प्रदान की गई संशोधन शक्ति की सीमा क्या है?

निर्णय

सर्वोच्च न्यायालय ने गोलकनाथ बनाम पंजाब राज्य मामले में निर्णय की समीक्षा की और 24वें, 25वें, 26वें और 29वें संशोधनों की वैधता पर विचार किया। इस मामले की सुनवाई 13 न्यायाधीशों की संवैधानिक पीठ ने की थी। बेहद नज़दीकी अंतर से विभाजित निर्णय में, 7-6 के बहुमत से, न्यायालय ने कहा कि हालांकि संसद के पास "व्यापक" शक्तियां हैं, लेकिन उसके पास संविधान के आधारिक संरचना (Basic Structure) को कम या नष्ट करने की शक्ति नहीं है।

- गोलकनाथ बनाम पंजाब राज्य, ए.आई.आर. 1967 एस.सी. 1643 (जिसमें कहा गया था कि संसद की संशोधन शक्तियां संविधान के किसी भी मौलिक अधिकार को कम नहीं कर सकती) को खारिज कर दिया गया था।

- संविधान (चौबीसवाँ संशोधन) अधिनियम, 1971 (संसद को संविधान के किसी भी भाग में संशोधन करने की शक्ति देना) को मान्य ठहराया गया।

- संशोधित हुआ अनुच्छेद 368 वैध था, लेकिन यह संसद को संविधान की आधारिक संरचना या ढांचे को बदलने की शक्ति प्रदान नहीं करता था। हालाँकि, न्यायालय ने किसी भी विस्तृत तरीके से यह नहीं बताया कि आधारिक संरचना क्या थी। हालाँकि कुछ न्यायाधीशों ने इस परिभाषा के कुछ उदाहरण दिए। इस मामले में अनुच्छेद 31सी के संशोधन को अमान्य माना गया।

न्यायाधीश एच. आर. खन्ना ने कहा कि "संविधान एक द्वार नहीं है, बल्कि एक रास्ता है। संविधान का मसौदा तैयार करने के पीछे एक जागरूकता है कि चीजें रुकती नहीं हैं, बल्कि आगे बढ़ती हैं। इससे यह तात्पर्य है कि एक प्रगतिशील राष्ट्र का जीवन, एक व्यक्ति के जीवन के समान होता है, जो स्थिर नहीं, बल्कि गतिशील और जोशपूर्ण है। इसलिए संविधान में प्रशासन के कार्य में प्रयोग और परीक्षण के लिए पर्याप्त प्रावधान होना चाहिए। इस बात पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है कि संविधान एक तय किया गया उत्कृष्टतम रूप की बोली का दस्तावेज नहीं है, बल्कि लोगों के जीवन को व्यवस्थित करने का साधन है और समय समय पर बदला भी जा सकता है।"

मुख्य न्यायाधीश एस.एम. सिकरी ने कहा कि:

विधान के प्रत्येक प्रावधान में संशोधन किया जा सकता है बशर्ते कि संविधान की मूल नींव और आधारिक संरचना समान रहे। इस संरचना में निम्नलिखित विशेषताएं शामिल की जा सकती हैं:

- संविधान की सर्वोच्चता;
- सरकार का गणतंत्रवादी और लोकतांत्रिक रूप के आदर्श;
- संविधान का धर्मनिरपेक्ष चरित्र;
- विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों का पृथक्करण;
- संविधान की संघीय संरचना आदि ।

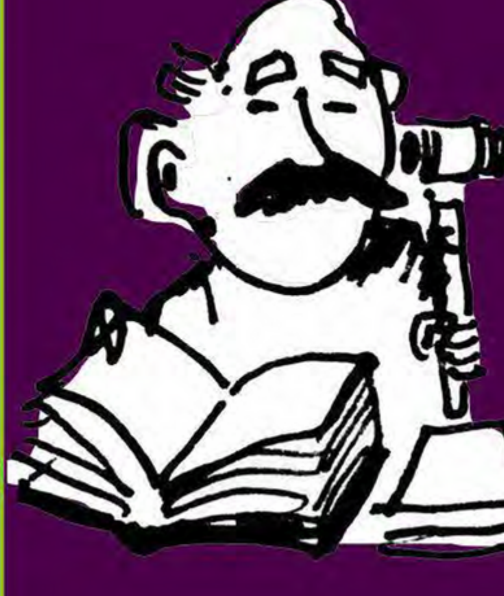

उपरोक्त संरचना व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता के मूल बुनियाद पर बनी है। यह सर्वोच्च महत्व की है, इसलिए इसे किसी भी प्रकार के संशोधन द्वारा हटाया या फिर नष्ट नहीं किया जा सकता है।

manupatra®

Malayalam

AWAAZ

www.manupatra.com

JUSTICE adda

manupatra® JUSTICE adda

കേശവാനന്ദ ഭാരതി അഭി. സ്റ്റേറ്റ് ഓഫ് കേരള

MANU/SC/0445/1973

വസ്തുതകൾ

ഇടനീർ മഠം മേധാവി സ്വാമി ശ്രീ എച്ച്. കേശവാനന്ദ ഭാരതി , സംസ്ഥാന ഭൂപരിഷ്കരണ നിയമപ്രകാരം കേരള സർക്കാരിന്റെ സ്വത്ത് നടത്തിപ്പിന് നിയന്ത്രണങ്ങൾ ഏർപ്പെടുത്താനുള്ള ശ്രമങ്ങളെ വെല്ലുവിളിച്ചു. സർക്കാർ ഇടപെടലില്ലാതെ മതപരമായി ഉടമസ്ഥതയിലുള്ള സ്വത്ത് കൈകാര്യം ചെയ്യാനുള്ള അവകാശത്തെക്കുറിച്ച് അനുച്ഛേദം 26 പ്രകാരം ഒരു നിവേദനം നൽകി.

1971-72 ൽ ഭരണഘടന ഭേദഗതി ചെയ്തു, അതിന്റെ ഫലമായി ഇനിപ്പറയുന്ന നിയമങ്ങൾ ഒമ്പതാമത്തെ ഷെഡ്യൂളിൽ ചേർത്തു-

- കേരള ഭൂമി പരിഷ്കാരങ്ങൾ (ഭേദഗതി) നിയമം, 1969;
- കേരള ഭൂമി പരിഷ്കാരങ്ങൾ (ഭേദഗതി) നിയമം, 1971

ഭരണഘടനാ ഭേദഗതികളെ വെല്ലുവിളിക്കുന്നതിനോടൊപ്പം അപേക്ഷകൻ നിവേദനങ്ങളുടെ ഭേദഗതികളുടെ സാധുതയെ കുറിച്ചും റിറ്റ് നിവേദനങ്ങളിലൂടെ ചോദ്യം ചെയ്തു

വിചാരണ ചെയ്യപ്പെട്ട നിയമ പ്രശ്നങ്ങൾ

അനുച്ഛേദം 13 (2) കൂടാതെ ഇന്ത്യൻ ഭരണഘടനയുടെ അനുച്ഛേദം 368 പ്രകാരം പാർലമെന്റിന് നൽകിയിട്ടുള്ള ഭേദഗതി ചെയ്യാനുള്ള അധികാരങ്ങൾ എന്തൊക്കെയാണ്

വിധിവിന്യായം

ഗോലക്നാത്ത് വിധിയിലെ തീരുമാനം സുപ്രീം കോടതി അവലോകനം ചെയ്തു. 24, 25, 26, 29- ആം ഭേദഗതികളുടെ സാധുത പരിഗണിച്ചു. 13 ജഡ്ജിമാരുടെ ഭരണഘടനാ ബെഞ്ചാണ് കേസ് കേട്ടത്. ഭിന്നിച്ച വിധിന്യായത്തിൽ, 7-6 എന്ന വ്യത്യാസത്തിൽ, പാർലമെന്റിന് വിശാലമായ അധികാരങ്ങളുണ്ടെങ്കിലും ഭരണഘടനയുടെ അടിസ്ഥാന ഘടകങ്ങളോ അടിസ്ഥാന സവിശേഷതകളോ നശിപ്പിക്കാൻ അധികാരമില്ല എന്ന് കോടതി വിലയിരുത്തി,

മൗലികാവകാശങ്ങൾ പാർലമെന്റിന്റെ ഭേദഗതി അധികാരങ്ങൾക്കപ്പുറമാണെന്ന് വാദിച്ച ഗൊലക്നാത്ത് കേസ് അസാധുവാക്കി.

ഭരണഘടന (24- ഭേദഗതി നിയമം, 1971) ഭരണഘടനയുടെ ഏതെങ്കിലും ഭാഗം ഭേദഗതി ചെയ്യാൻ പാർലമെന്റിന് അധികാരം നൽകുന്നത് സാധുതയുള്ളതാണ് എന്ന് കോടതി ശരിവച്ചു

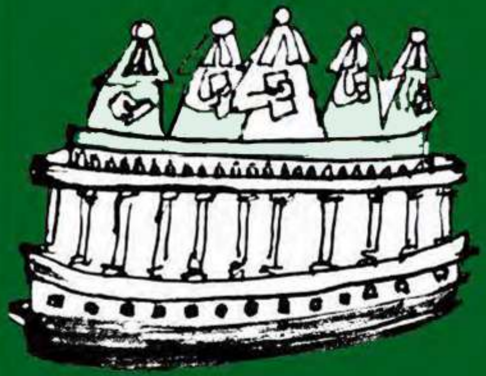

അനുച്ഛേദം 368, ഭേദഗതി പ്രകാരം സാധുവായിരുന്നു എന്ന്കോടതി ശരിവെച്ചു, പക്ഷേ ഭരണഘടനയുടെ അടിസ്ഥാന ഘടനയിലോ ചട്ടക്കൂടിലോ മാറ്റം വരുത്താൻ പാർലമെന്റിന് അധികാരം നൽകിയില്ല. എന്നിരുന്നാലും, ചില ജഡ്ജിമാർ കുറച്ച് ഉദാഹരണങ്ങൾ നൽകി എന്നതൊഴിച്ചാൽ അടിസ്ഥാന ഘടന എന്താണെന്ന് കോടതി സമഗ്രമായ രീതിയിൽ വ്യക്തമാക്കിയിട്ടില്ല. അനുച്ഛേദം 31C ഭേദഗതി അസാധുവായി പ്രഖ്യാപിച്ചു

ജസ്റ്റിസ് എച്ച് ആർ ഖന്ന

ഭരണഘടന ഒരു വാതിലല്ല, വഴിയാണ്. ഒരു ഭരണഘടനയുടെ കരട് തയ്യാറാക്കുന്നതിനു പുറകിൽ കാര്യങ്ങൾ നിശ്ചലമായി നിലകൊള്ളുന്നില്ല, , ഒരു പുരോഗമന രാഷ്ട്രത്തിന്റെ ജീവിതം, ഒരു വ്യക്തിയെന്ന നിലയിൽ, സ്ഥിരവും നിശ്ചലവും ചലനാത്മകവുമല്ല എന്ന് ബോധ്യമുണ്ട്. അതിനാൽ ഒരു ഭരണഘടനയിൽ ഭരണനിർവഹണ ചുമതലയിൽ പരീക്ഷണത്തിനും വിചാരണയ്ക്കും ധാരാളം വ്യവസ്ഥകൾ അടങ്ങിയിരിക്കണം. ഒരു ഭരണഘടന വേഗതയേറിയ വൈരുദ്ധ്യാത്മകതയ്ക്കുള്ള

ഒരു രേഖയല്ല, മറിച്ച് ഒരു ജനതയുടെ ജീവിതത്തെ നയിക്കുന്നതിനുള്ള മാർഗമാണ്.

ചീഫ് ജസ്റ്റിസ് എസ് എം സിക്രി

ഭരണഘടനയുടെ ഓരോ പ്രൊവിഷനും ഭേദഗതി വരുത്താം, എന്നാൽ അടിസ്ഥാന ഘടന മാറുന്നില്ല. താഴെപ്പറയുന്നവ അടിസ്ഥാന ഘടനയിൽ ഉൾപ്പെടുന്നു

1. ഗവൺമെന്റിന്റെ റിപ്പബ്ലിക്കൻ, ഡെമോക്രാറ്റിക് ഫോമുകൾ
2. നിയമപരമായ, എക്സിക്യൂട്ടീവ്, ജുഡീഷ്യൽ എന്നിവയ്ക്കിടയിലുള്ള വ്യക്തികളുടെ വിഭജനം.
3. ഭരണഘടനയുടെ ഫെഡറൽ സ്വഭാവം.

മേൽപ്പറഞ്ഞ ഘടന അടിസ്ഥാന അടിത്തറയിലാണ് നിർമ്മിച്ചിരിക്കുന്നത്, അതായത് വ്യക്തിയുടെ അന്തസ്സും സ്വാതന്ത്ര്യവും. ഇത് വളരെയധികം പ്രാധാന്യമർഹിക്കുന്നു. ഇത് ഏതെങ്കിലും തരത്തിലുള്ള ഭേദഗതിയിലൂടെ നശിപ്പിക്കാൻ കഴിയില്ല.

Marathi

AWAAZ

www.manupatra.com

JUSTICE adda

केशवानंद भारती
विरुद्ध
केरळ राज्य

मनु/ एस सी/0445/1973

घटनाक्रम

स्वामी श्री एच एच श्री केशवानंद भारती, जे "एडनीर मठा" चे प्रमुख होते, त्यांनी केरळ राज्य सरकारच्या २ राज्य भू-सुधारणा कायद्यांतर्गत मठाच्या जमीनीच्या व्यवस्थेत निर्बंध लागू करण्याच्या प्रयत्नांना आव्हान दिले. त्यांनी अनुच्छेद २६ अंतर्गत सरकारच्या हस्तक्षेपाशिवाय धार्मिक जमीन व्यवस्थापन करण्याच्या अधिकाराबद्दल रिट याचिका दाखल केली.

संविधानात १९७१-७२ च्या काळात झालेल्या सुधारणांप्रमाणे ही कलमे नवव्या अनुसूचीमध्ये जोडण्यात आली:

- केरळ भू-सुधारणा (सुधारणा) कायदा, १९६९ (केरला अ‍ॅक्ट 35 ऑफ 1969)

- केरळ भू-सुधारणा (सुधारणा) कायदा, १९७१ (केरला अ‍ॅक्ट 25 ऑफ 1971)

यावर याचिकाकर्त्याने या सुधारणेला आव्हान देण्यासाठी अतिरिक्त कारणे आणि रिट याचिकेत दुरुस्तीची विनंती केली.

कायद्याचे प्रश्न

अनुच्छेद १३(२) जे राज्यकर्त्यांवर मूलभूत अधिकारांविरुद्ध कायदे बनवण्यावर निर्बंध आणते) शिवाय, संविधानाच्या अनुच्छेद ३६८ अंतर्गत संसदेकडे कितपत सुधारणेचा अधिकार आहे?

निर्णय

न्यायालयाने गोलखनाथ विरुद्ध पंजाब राज्यामध्ये दिलेल्या निर्णयाची पुनर्तपासणी करुन २४, २५, २६ आणे २९ व्या सुधारणेंच्या वैधतेची पडताळणी केली. १३ न्यायाधीशांच्या संविधानपीठासमोर या प्रकरणाची सुनावणी झाली. ७-६ च्या फरकाने, तीव्रपणे विभाजित केलेल्या निकालात, न्यायालयाने असे मानले की संसदेला "विस्तृत" अधिकार असताना, तिच्याकडे संविधानातील मूलभूत घटक किंवा मूलभूत वैशिष्ट्ये नष्ट करण्याचा किंवा कमी करण्याचा अधिकार नाही.

- गोलखनाथ विरुद्ध पंजाब राज्य, AIR 1967 SC 1643 चा निर्णय रद्द करण्यात आला. (या याचिकेचा निर्णय संसदेकडे मूलभूत हक्क सुधारण्याचा अधिकार नाही असा होता.)

- संविधान (२४ वी सुधारणा) कायदा, १९७१ वैध ठरवला गेला. या अंतर्गत संसदेला घटनेच्या कुठल्याही भागात सुधारणा करण्याचा अधिकार देण्यात आला होता.

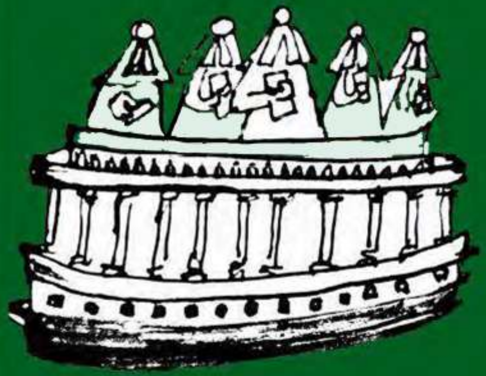

- अनुच्छेद ३६८, सुधारणेप्रमाणे वैध असून संसदेला संविधानाची मूलभूत रचना किंवा चौकट बदलण्याचा अधिकार नाही. पण न्यायालयानी " संविधानाची मूलभूत रचना " म्हणजे काय याची विस्तारित व्याख्या न देता फक्त काही उदाहरणे दिली. अनुच्छेद ३१(ग) ची सुधारणा अवैध ठरवण्यात आली.

एच.आर. खन्ना, न्यायाधिश:

"संविधान हा एक दरवाजा नसून एक रस्ता आहे. संविधान घडवण्यात याची जाणीव सतत आहे की परिस्थिती तटस्थ, स्थिर नसून सतत बदलणारी, पुढे चालणारी आहे. एक प्रगतीशील देश हा, माणसा सारखाच, स्थिर आणि स्तब्ध नसून गतिमान आणि धडाकेबाज असतो. त्यामुळे संविधानातसुद्धा प्रशासनाच्या कार्यात प्रयोग आणि चाचणीसाठीपुरेशी तरतूद असली पाहिजे. एक संविधान हे द्वंद्ववादाचे कागदपत्र नसून सामान्य लोकांच्या जीवनाला सुकर करण्याचे साधन आहे."

एस.एम. सिकरी, मुख्य न्यायाधिश:

"संविधानातील प्रत्येक तरतूद बदलली जाऊ शकते - फक्त संविधानाचा पाया आणि रचना कायम असायला हवी. मूलभूत संरचनेत खालील वैशिष्ट्ये आहेत असे म्हटले जाऊ शकते:

- संविधानाचे वर्चस्व
- प्रजासत्ताक आणि लोकशाहीवादी सरकार
- धर्मनिरपेक्षता
- न्यायपालिका, कार्यकारी आणि विधिमंडळ यांच्यातील अधिकारांचे पृथक्करण
- संविधानाचे फेडरल वैशिष्ट्य

आणि या रचनेचा मूलभूत पाया आहे : प्रत्येक व्यक्तिची प्रतिष्ठा आणि व्यक्तिस्वातंत्र्य हे सगळयात महत्त्वाचे आहे. हे कुठल्याही सुधारणेनी नष्ट केले जाऊ शकत नाही."

manupatra®

Urdu

AWAAZ

www.manupatra.com

JUSTICE adda

۴۔کیوانند بھارتی
بمقابلہ
ریاست کیرالہ
MANU/SC/0445/1973

پس منظر

سوامی شری ایچ ایچ شری کیشوانندبھارتی،ایڈنر مٹھ’کے سربراہ نے کیرالا حکومت کے دو اسٹیٹ لینڈ ریفورم ایکٹ[State Land Reform Acts] کے تحت اپنی جائدات کے انتظام پر پابندیا لگانے کی کوششوں پر داوا کیا۔ایک درخواست آرٹیکل ۲۶ کے تحت دائر کی گئی تھی، جس میں حکومتی مداخلت کے بغیر مذہبی ملکیت کی جائداد کا انتظام کرنے کے حق سے متعلق بات کی گئی تھی۔

۱۹۷۱-۷۲ میں آئین کو ترمیم کیا گیا جس کے نتیجے میں درج ذیل ایکٹ کو نوی فہرست[schedule]میں دلخل کیا گیا :

- .کیرالا لینڈ ریفورمس ایکٹ (ترمیم)ایکٹ،۱۹۶۹ Kerala Land Reforms[Amendment] Act]-
-.کیرالا لینڈ ریفورمس ایکٹ (ترمیم)ایکٹ، Kerala۱۹۷۱ Land Reforms[Amendment] Act]-

پھر درخواست گزار نے آئین ترامیم کو چیلنج کرنے کے لیے اضافی بنیاد پر رٹ کی درخواست[writ petition] دائر کی-

قانون کے سوالات-

آرٹیکل ۱۳(۲)(ریاست پر ایسے قانون پر روک لگاتا ہے جو بنیادی حقوق[Fundamental Rights] پر روک لگائے)کے علاوہ آئین کے آرٹیکل ۳۶۸ کے ذریعے حاصل کردہ ترمیمی اختیارات کی کیا حد ہے؟

فیصلہ۔

سپریم کورٹ نے گولکھناتھ بمقابلہ ریاست پنجاب کا جاہذاہ لیا اور ۲۴، ۲۵، ۲۶اور۲۹ ترمیم کی درستی پر غور کیا۔کیس کو ۱۳ ججوں کی آئینی بینچ نے سنا۔سختی سے منتخم ۷-۶کے فرق سے لئے گئے فیصلے میں عدالت نے کہا کی ہلانکہ پارلیمنٹ کے پاس وسیع اختیارات ہیں لیکن اس کے پاس آئین کی بنیادی عناصر یا بنیادی خصوصیات کو تباہ یا برباد کرنے کا اختیار نہیں ہے۔

- سپریم کورٹ نے گولکھناتھ بمقابلہ ریاست پنجاب کا جاہذاہ لیا اور ۲۴، ۲۵، ۲۶اور۲۹ ترمیم کی درستی پر غور کیا۔کیس کو ۱۳ ججوں کی آئینی بینچ نے سنا۔سختی سے منتخم ۷-۶کے فرق سے لئے گئے فیصلے میں عدالت نے کہا کی ہلانکہ پارلیمنٹ کے پاس وسیع اختیارات ہیں لیکن اس کے پاس آئین کی بنیادی عناصر یا بنیادی خصوصیات کو تباہ یا برباد کرنے کا اختیار نہیں ہے۔

- . گولکھناتھ بمقابلہ ریاست پنجاب،۱۹۶۳ [جس کانتیجا تھا کی بنیادی حقوق پارلیمنٹ کے ترمیمی اختیارات سے باہر ہیں]کو مستردکر دیا گیا۔
. آئین[چوبیس ترمیمی] ایکٹ،۱۹۷۱[Constitution (24th (amendment) Act][جس نے پارلیمنٹ کو آئین کے کسی بھی حصے میں ترمیم کرنے کا اختیردیا ہے]کو درست قرار دیا۔

- . ترمیم شدہ آرٹیکل ۳۶۸،درست تھا لیکن اس نے پارلیمنٹ کو آئین کے بنیادی ڈھانچے کو بدلنے کا اختیار نہیں دیا۔تاہم عدالت نے کسی بھ جامع اندازمیں یہ نہیں بتایا کہ بنیادی ڈھاچا کیا ہے ،سوائے اس کے کہ کچھ ججوں نے چند مثالیں دی ہیں۔آرٹیکل۳۱Cکی ترمیم کو غلط قرار دیا گیا۔

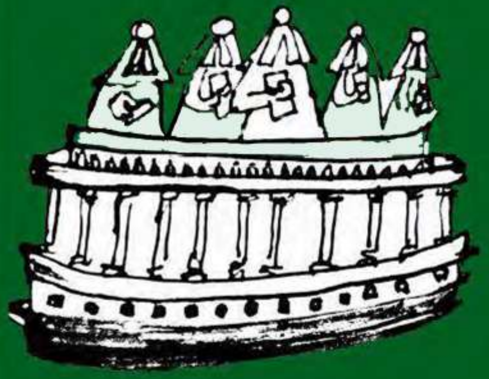

ایچ-آر ۔ کھننا،جے

آئین دروازہ نہیں راستا ہے-آئین کے مسودے سے یہ شعور ہے کے چیزیں ٹھہرتی نہیں ہیں بلکہ آگے بذھتی رہتی ہیں ، یہی ایک ترقی پسند قوم کی بحثیت فتد زدگی ہے،یہ جامد اور جمودنہیں بلکہ متحرک اور تابناک ہے- اس لئے آئین میں انتظامیہ کے کام میں تجربے کے لئے کافی فراہمی ہونا چاہئے-اس پر زور دینے کی ضرورت ہے کہ آہین تیز جدیدیت کا دستاویز نہیں ہے بلکہ لوگوں کی زندگی کو تررہب دینے کا ذریعہ ہے-

ایس-ایم- سیکری ،سی-جے

آئین کے ہر شق میں ترمیم کی جا سکتی ہے بشرطیہ کہ اس کے نتیجے میں آئین کا بنیادی ڈھانچا اور بنیاد وہی رہے- بنیادی ڈھانچا مندرجہ ذیل خصوصیات پر مشتمل کہا جا سکتا ہے:

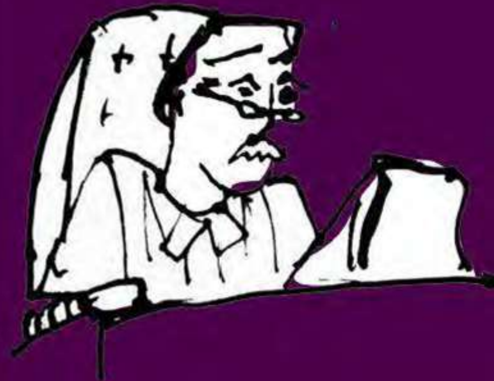

. آئین کی بالادستی [Supremacy of constitution]
. حکومت کی جمہوری[Democratic]
. آئین کا لادینی کردار[Secular Character]
. مقننہ[Legislature]
،انتظامیہ [Executive]
اور عدلیہ[Judiciary]
طاقتوں میں علیحدگی
. آئین کا وفاقی کردار

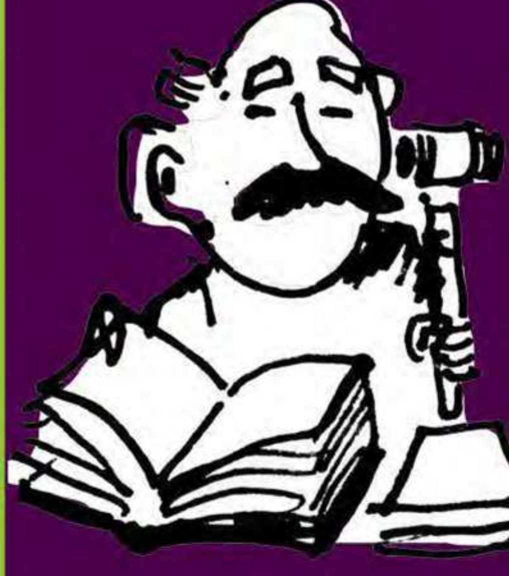

مندرجہ بالا ساخت بنیادی ڈھانچے پر بنایا ہے یعنی فرد کے وقار اور آزادی پر-یہ سب سے ذیادہ اہمیت کا حامل ہے-یہ کسی بھی قسم کی ترمیم سے تباہ نہیں ہو سکتا-